श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :

परम पूज्य सिद्धांत चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :

आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

कृति :

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद :

प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य
श्री विद्यानंद जी मुनिराज

लेखक :

आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्पादक :

आर्यिका वर्धस्वनंदनी

संस्करण : प्रथम : 2017 (1100 प्रतियाँ)
द्वितीय : 2017 (1100 प्रतियाँ)
तृतीय : 2018 (1100 प्रतियाँ)
चतुर्थ : 2022 (1100 प्रतियाँ)

ISBN : 978-93-94199-16-3

मूल्य : सदुपयोग

प्राप्ति स्थान :

निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति

ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889, 9867557668

मुद्रण व्यवस्था :

चन्द्रा कॉपी हॉउस

हॉस्पिटल रोड, आगरा-282003 (उ.प्र.)
Tel. : 9412260879

णाणं पयासओ

सूर्योदय होने से केवल तमोपुंज का ही अंत नहीं होता अपितु दिव्य प्रकाश का भी उदय होता है। प्रकाश जीवंतता का प्रतीक है, दिवाकर का प्रकाश दिव्यता का द्योतक भी है, उसके माध्यम से प्राणी दिव्यता को प्राप्त करने में समर्थ होता है। प्रकाश को केवल ज्ञान का ही प्रतीक नहीं माना अपितु सुख का कारण भी स्वीकार किया गया है। इसीलिए न्याय ग्रंथों में दीपक को स्वपर प्रकाशी निरूपित करते हुए ज्ञान की महिमा को प्रदर्शित किया है। जिस प्रकार प्रकाश के बिना अंधकार में जीया गया जीवन अनेक दुःख क्लेश, अशांति, वैमनस्यता, ईर्ष्या, विद्वेष, चिन्ता आदि विकारों को जन्म देने वाला होता है एवं दुष्कृत्यों का निमित्त कारण बन जाता है, उसी प्रकार चेतना में विद्यमान अंधकार मिथ्यात्व, अज्ञान, असंयम और दुःख रूप प्रवृत्ति कराने वाला होता है।

बहिर्जगत् में विद्यमान तमसावृत्त निशा का निराकरण करने के लिए आदित्य समर्थ होता है। अनेक चंद्रादि ज्योतिर्ग्रह निशा में उदित होकर अपने अस्तित्व का बोध कराते हुए शीतल प्रकाश भी प्रदान करते हैं। चेतना के प्रदेशों पर विद्यमान मिथ्यात्वादि के अंधकार को सम्यक्त्व, सम्यक्ज्ञान एवं सम्यक्चारित्र के तीन रत्न ही तिरोहित करने में समर्थ होते हैं। इन तीन रत्नों की प्राप्ति सर्वज्ञ, वीतरागी, प्राणी मात्र के लिए हितोपदेशी जिनेन्द्र देव के माध्यम से ही संभव है किन्तु वर्तमान में दुखमा नाम का पंचमकाल उदयावस्था को प्राप्त होता है अतः भरत व ऐरावत क्षेत्र में केवली भगवान का सद्भाव संभव नहीं है, उनके अभाव में जिनवाणी भव्य प्राणियों के मिथ्यात्वादि अंधकार को दूर करने में समर्थ है।

आ. पद्मनन्दी स्वामी जी ने पद्मनंदीपंचविंशतिका में लिखा है–

सम्प्रत्यस्ति न केवली किल किलौ त्रैलोक्यचूड़ामणि–
स्तद्वाचः परमासतेऽत्र भरत क्षेत्रे जगद्योतिका।
सद्रत्नत्रयधारिणो यतिवरास्तेषां समालम्बनं,
तत्पूजा जिनवाचिपूजनमतः साक्षाज्जिनः पूजितः॥

वर्तमान में इस कलिकाल में तीन लोक के पूज्य केवली प्रभु इस भरत क्षेत्र में साक्षात् नहीं हैं तथापि समस्त भरतक्षेत्र में जगत्प्रकाशिनी केवली प्रभु की वाणी मौजूद है तथा उस वाणी के आधारस्तंभ श्रेष्ठ रत्नत्रयधारी मुनि भी हैं इसीलिए उन मुनि का पूजन तो सरस्वती का पूजन है तथा सरस्वती का पूजन साक्षात् केवली का पूजन है।

जिनवाणी का संवर्धन, संरक्षण एवं संस्थिति वर्तमान में निर्ग्रंथ साधु आदि चतुर्विध संघ से है। निर्ग्रंथ संत आदि आत्मसाधक जिनवाणी की दिव्य देशना के माध्यम से स्वपर का कल्याण करने में संलग्न हैं। जिनवाणी का प्रचार–प्रसार ज्ञानवरणी, दर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशम को ही वृद्धिंगत नहीं करता है अपितु मोहनीय कर्म के क्षयोपशम को वृद्धिंगत करने में भी कारण है तथा अशुभ आयु, अशुभ नाम, नीच गोत्र, असाता वेदनीय एवं अंतराय कर्म के बंधन से बचाने वाला है, आत्मकल्याण के मार्ग में आने वाले विघ्नों को विलुप्त करने वाला है। जिनवाणी के सम्यक् प्रचार–प्रसार से असातावेदनीय को सातावेदनीय में, अशुभ नामकर्म को शुभ नामकर्म में, नीचगोत्र को उच्चगोत्र में संक्रमित भी किया जा सकता है। जिनवाणी के अध्ययन–अध्यापन से शुभास्रव, सातिशय पुण्य का बंध, अशुभ का संवर एवं पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होती है।

वर्ष 2016-17 हम परम पूज्य अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के रूप में अनेक धार्मिक अनुष्ठानों के साथ आयोजित कर रहे हैं। इसी श्रृंखला में आचार्य प्रणीत वर्तमान में अनुपलब्ध बहुपयोगी 50 शास्त्रों का प्रकाशन करने का संकल्प निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति आदि संस्थाओं ने लिया है। उसी क्रम में प्रस्तुत ग्रंथ **''श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान''** आपके श्री करकलों में स्वपर हित की मंगल भावना से समर्पित है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप प्रस्तुत ग्रंथ के माध्यम से स्व-पर कल्याण की भावना को वृद्धिंगत करते हुए जिनशासन की प्रभावना में भी निमित्त बनेंगे। सुधी पाठकों से सविनय अनुरोध है वे प्रस्तुत ग्रंथ से स्वकीय पात्रता के अनुसार आत्मा को पवित्र करने वाली सतत प्रवाही श्रुत गंगा से श्रुतामृत को ग्रहण कर उसका सदुपयोग ही करें। हंसवत् क्षीरग्राही दृष्टि बनाकर गुणों को ही ग्रहण करें, दोषों का परिमार्जन करने में तत्पर हों। प्रमादवश, अज्ञानतावश हुयी त्रुटियों को या चूक को भूल या चूक समझकर ही विसर्जित कर दें। आप जैसे सुधी पाठक इस ग्रंथ रूपी दधिका में उतरकर नवनीत को ही ग्रहण करें क्योंकि कोई भी ग्वाल या गोपी छाछ ग्रहण करने के उद्देश्य से दधि मंथन नहीं करती। अतः आप भी तदैव प्रवृत्ति करें।

मैं अंतस् की समग्र निष्ठा, भक्ति, समर्पण के साथ सर्वज्ञ देव, श्रुत सिंधु एवं निर्ग्रंथ गुरुओं के चरणों में अनंतशः प्रणाम निवेदित करता हूँ तथा परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरुदेव के पद कमलों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित कोटिशः नमन करता हुआ उनके स्वस्थ संयमी जीवन की एवं आत्म ध्यान के संवर्द्धन की भावना करता हूँ।

जिन श्रुताम्बुज चंचरीक

-मुनि प्रज्ञानंद

पुरोवाक्

दानं ज्ञानधनाय दत्तमसकृत् पात्राय सद्वृत्तये।
चीर्णान्थुग्रतपांसि तेन सुचिरं पूजाश्च बह्त्यः कृता।।
शीलानां निचयः सहामलगुणैः सर्वः समासादितो।
दृष्टस्त्वं जिन! येन दृष्टिसुभगः श्रद्धायरेण क्षणम्।।

–जिनचतुर्विंशतिका

इस दुर्लभ मनुष्यभव में जिसे जिनेन्द्रभक्ति मिली, उसे अन्य कुछ प्राप्तव्य शेष नहीं रहा। उसने दान का फल प्राप्त कर लिया, उग्र तपश्चर्या कर ली, पूजा–प्रक्षाल के शतसंवत्सर पूर्ण कर लिए, सभी पवित्र गुणों के साथ शील का सर्वग्राही रूप प्राप्त कर लिया। तन्मयता के एक क्षण में भव–भव के वरदान उसे प्राप्त हो गए।

संसार ने उसे गुणभूषण कहा, श्रुतस्कंध का पारगामी एवं प्रज्ञापारमित बताया जिसने भक्ति रूपी सरोवर में अवगाहन किया है। जिनेन्द्र प्रभु की पूजा संसार दुखों का निवारण करने में समर्थ है। भव्य प्राणियों के प्रति करुणा दृष्टि रखते हुए ही संभवतः आचार्यों ने जिनपूजा को श्रावकों के आवश्यक कर्त्तव्यों में स्थान दिया।

परमात्मा की पूजन परमात्म भाव को आत्मप्रतिष्ठित करने की सूचना है। विधानादि के माध्यम से भगवान का गुणानुवाद करना, यह कर्मनिर्जरा का ही संकेत है। भक्ति भाव बोध की उत्कृष्ट पराकाष्ठा के साथ जब जिनेन्द्र प्रभु की पूजन की जाती है तब वह भक्ति रूपी पवित्र नीर ही आत्मा को परमात्मावस्था, परमात्म पद पर अधिष्ठित करने से पूर्व राज्याभिषेक के समान है।

प्रस्तुत ''श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'' का लेखन पूज्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने अब से लगभग 6 वर्ष पूर्व किया था। हमेशा की तरह अपनी कृति से भी निस्पृह रहने वाले, उन्हें अपनी इस कृति का लिखने के पश्चात् बोध नहीं रहा। आज इतने वर्षों बाद पुराने शास्त्रादि का अवलोकन करते हुए इसकी पाण्डुलिपि प्राप्त हुई।

सभी लोग इसके माध्यम से परमात्मा की पूजन कर, भक्ति कर विशुद्ध परिणामों के साथ प्रभु के चरणों तक पहुँचने का अनुमति पत्र पाप्त कर सकें इस हेतु इसका संपादन किया जा रहा है।

प्रस्तुत ''श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान'' श्रावकों के धर्मध्यान के लिए एक सुसमर्थ कारण हो सकता है। हमारा आपको यही निर्देश है कि आप सुखानुभव के क्षणों में या दुःखानुभव के क्षणों में भी इस विधान को शक्ति अनुसार करके, आपका जीवन मंगलमय बनायें।

इस विधान के मुद्रण, पाण्डुलिपि संशोधन में जिन-जिन महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन्हें सदैव परम् पूज्य गुरुदेव का शुभाशीष।

''सर्वेशां मंगलं भवतु''

–आर्यिका वर्धस्वनंदनी

अनुक्रमणिका

1. मंगलाष्टक 9
2. विधान की प्रारंभिक क्रियायें 11
3. अभिषेक पाठ (संस्कृत) 16
4. अभिषेक पाठ (हिंदी) 21
5. श्री शांतिधारा 25
6. विनयपाठ 30
7. पूजन पीठिका 32
8. नवदेवता पूजन (आ० श्री वसुनंदी जी मुनिकृत) 38
9. प्राकृत सिद्धभक्ति (आ० श्री वसुनंदी जी मुनिकृत) 42
10. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ विधान 44
11. समुच्चय महार्घ्य 67
12. शांतिपाठ (भाषा) 69
13. विसर्जन पाठ 71
14. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ जी चालीसा 71
15. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती 75
16. निर्वाणकाण्ड 76
17. श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ स्तवन 79
    (वृ. स्वयंभू स्तोत्र/आ०श्री समन्तभद्र स्वामी कृत)
18. मुनि सुव्रतनाथ भगवान का जीवन परिचय 82
19. परम्पराचार्य अर्घावली 84
20. आचार्य श्री विद्यानंद जी गुरुवर की पूजन 86
21. आचार्य श्री विद्यानंद गुरुवर की आरती 91
22. मांडना...92

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलायेऽष्टौ-वियच्चारिणः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।६।।

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।७।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्।।८।।

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि।।९।।

।।इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्।।

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

(1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ। (इन नौ स्थानों पर तिलक लगायें)।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(सात बार पुष्प क्षेपण करें)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छुद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि

(दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें।

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक - गंगासिन्धु- रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीता - सीतोदा - नारी - नरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाढ्य– ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे .... मासे .... पक्षे ....तिथौ......................... वासरे .... प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं .... कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

अभिषेक पाठ

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाह्निक – देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म – क्षयार्थं भावपूजा – स्तव – वन्दना – समेतं श्री – पञ्च – महागुरु – भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

(वसन्ततिलका)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥

अथ जिनाभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलि क्षिपेत्।
(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि।

(अनुष्टुप)

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन - स्नपनाय भक्तितः॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण - पीठ - कुम्भ,
तालध्वजा - तपनिवारक - भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

(अनुष्टुप)

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत् - स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ - कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥

(अनुष्टुप)

शातकुम्भीय - कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान - चन्दनादि - सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर प्रमदादि - गानैः,
वादित्र - पूर - जय - शब्द - कल - प्रशस्तैः।
उद्गीयमान - जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलींवसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

कर्म - प्रबन्ध - निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुप)

तीर्थोत्तम - भवैनीरैः क्षीर - वारिभि - रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान्, जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

(मालिनी)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

(वसन्ततिलका)

पानीय - चन्दन - सदक्षत - पुष्पपुञ्जैः
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फलव्रजेन।
कर्माष्टक - क्रथन - वीर - मनन्त - शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्कबन्धकल्पाः,
यूयंजिनाःसततशान्तिकराभवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा मुहूर्निज - करै - रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

(वसन्ततिलका)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

(अनुष्टुप)

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे,जन्म-दुःखा–पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्,
भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र - त्रिदशेन्द्र - चक्र - पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान - चरित्र - दर्शन - लता, संवृद्धि - सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन् ! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

जलाभिषेक वा प्रक्षाल-पाठ

(प्रक्षाल करते समय पढ़ना चाहिये।)

दोहा

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुगपान॥

(ढाल– मंगल की) (छंद–अडिल्ल और गीता)

श्री जिन जगमें ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवनधनी॥

अनुपम अमित तुम गुणनि-वारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हम उर कोष में सो अकथ-गुण-मुणि राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन, आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥

तब इन्द्र जान्यो अवधितैं, उठि सुरन-युत वंदत भयो।
तुम पुन्यको प्रेरयो हरी ह्वै मुदित धनपतिसों कह्यो॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति सफल सुरपदको करो।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरो॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपति।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयो।
दे प्रदच्छिना बार बार वंदत भयो॥
अति भक्ति-भीनो नम्र-चित ह्वै, समवशरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गतीको, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामंडप कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
तापर वारिज रच्यौ प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौसठ चमरजी।
महा भक्तियुत ढोरत हैं तहां अमरजी॥
प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यही वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभा के भविजीव मस्तक नाय के।
बहुभांति बारंबार पूजैं, नमैं गुणगण गाय के॥4॥
परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरामृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥
श्रमबिना श्रमजलरहित पावन अमल ज्योति-स्वरूपजी।
शरणागतनि की अशुचिता हरि, करत विमल अनूपजी॥
ऐसे प्रभू की शांतिमुद्रा को न्हवन जलतैं करें।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति तैं हम भानु ढिग दीपक धरें॥5॥

तुम तो सहज पवित्र यही निश्चय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसु-विधि-वश दुख सह्यो॥
बीत्यो अनंतो काल यह मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता-हर एक तुम ही, भरहु बांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल रोष-रागादिक हरो।
तनरूप कारा-गेहतैं उद्धार शिव वासा करो॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनोरथ पूरत सही।
नय-प्रमानतैं जानि महा साता लही॥
पापाचरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूं।
साक्षात श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूं॥
ऐसे विमल परिणाम होते अशुभ नसि शुभबंध तैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै शर्म सब विधि तासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन, भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यानतैं।
पावन रसना मानी, तुम गुण गानतैं॥
पावन भई परजाय मेरी, भयो मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन प्रचंड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, आदि संज्ञा धरो।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करो।।
आनंद-कारण दुख-निवारण, परम-मंगल-मय सही।
मोसो पतित नहिं और तुमसो, पतित-तार सुन्यो नहीं।।
चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े, ते भये भवदधि-पार ही।।9।।

दोहा

तुम भवदधितैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्तिको, हमैं उतारो पार।।10।।

।।इति हरजसराय कृत अभिषेक पाठ।।

श्री शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः **श्री वीतरागाय नमः**

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्व ग्रहारिष्ट शांति कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/शांतिधारा कर्ता का नाम.... सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि - सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल- सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य - मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि - सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य - मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य - शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं - बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वढ्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति - प्रसादाद्लक्ष्मी - पुर - राज्य - गेह - पद - भ्रष्टोपद्रव - दारिद्रोद् भवोपद्रव - स्वचक्र - परचक्रोद्भवोपद्रव - प्रचण्ड - पवनानल जलोद्भवोपद्रव - शाकिनी - डाकिनी - भूत-पिशाच- कृतोपद्रव - दुर्भिक्षव्यापार - वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री. ....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्म बलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः।।

(उपजाति छन्द)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

।।इति शांतिधारा।।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजन-पीठिका

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥
अपराजित - मंत्रोऽयं, सर्व - विघ्न - विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङ्महं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्।।
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।१।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।३।।

द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।४।।

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।।
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।५।।

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।
।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्‌भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।१।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः।।२।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः।।३।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

– आ. वसुनंदी मुनि

स्थापना

(छंद–हरिगीतिका)

त्रैलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता।।
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा।।

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालयेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते, ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतू, आये आप समीप हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु – जिनधर्म–जिनागम – जिनचैत्य–जिनचैत्यालयेभ्यो नमः

(नौबार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

(छंद–लक्ष्मीधरा) (तर्ज–भौन बावन्न प्रतिमा....)

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रातिहार्यं युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।१।।

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।२।।

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।३।।

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।४।।

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।५।।

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।६।।

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।७।।

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।८।।

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी।।
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हतादि नवदेवता, सदा करें उर वास।
पुष्पांजली चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास।।

(शान्तये... शांतिधारा पुष्पांजलि क्षिपामि)

श्री सिद्ध भक्ति (प्राकृत)

देहातीदे सिद्धे, अतीदे रसवण्णफासगंधादु।
पणविहसंसाररहिद - सिद्धे णमंसामि भत्तीइ।।1।।
संसारकारणादो, णाणावरणाइ - अट्ठ - कम्मादो।
विरहियाण सिद्धाणं - णमो णमो सुद्धभावेहिं।।2।।
रायद्दोसमोहाइ - भावकम्मादु हीणाण सुद्धाण।
णिम्मलभावजुदाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं।।3।।
अग्गिणा सुतविद-सुद्ध - कणयपासाणंव सोहिदा जेहि।
तवेण णियप्पा ताण, सिद्धाणं णमंसामि सया।।4।।

सम्मत्तणाणचरित्त - रूव - सिवमग्गे जेहिं गच्छित्ता।
लहिदा सस्सदसिद्धी, पणमामि ताणं सिद्धांणं॥5॥

चित्ते उप्पज्जमाण - उत्तमखमाइ - भावेहिं णिच्चं॥
जेहिं लहिदा सिद्धी - णमो सया ताण सिद्धाणं॥6॥

धम्मज्झाणेण पुण, सुक्कज्झाणरूवसमत्थत्थेण।
कम्मसत्तुविजेदूं हु, सव्वविसुद्ध - सिद्धा णमामि॥7॥

कोह-माण-जिम्ह-लोह - कसायभावादो हीणा अयला।
अण्णकसायवज्जिदा, पणमामि णिरंजणा सिद्धा॥8॥

खओवसमिग-ओदइय-उवसमिग-भावादु रहिदा णिच्चा।
खइयभावसहिदा चिय, सव्वसिद्धा णमंसामि हं॥9॥

सम्मत्त - णाण - दंसण - वीरिय - सुहुमत्तवगाहणत्तेहि।
अगुरुलहु - अव्वाबाह - गुणजुत्ता पणमामि सिद्धा॥10॥

बावण्णप्पइडिणूण - बेसयप्पइडिविहीणसिद्धाणं।
अंतातीदगुणजुदा, णमंसामि णिरुवमा सिद्धा॥11॥

णिक्कम्मा चिय पणविह - संसारहीणा देहविहीणा हु।
गमणागमणविहीणा, जम्ममरणविहीणा वंदे॥12॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसा आलोयमि। दव्वभावणोकम्महीणे सम्मत्ताइ-अट्ठ-मूलगुणजुत्ते अणंतोत्तरपज्जायसहिदे, लोयग्गठिदे सव्वसिद्धे सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ विधान

(छंद–चउबोला)

(तर्ज–अनादि काल से....)

स्थापना

पद्मा रानी अरु सुमित्र सुत, मुनिसुव्रत जिननाथ हुए।
जिन वसु निधि को मूल नशाकर, वसुगुण पाय सनाथ हुए।।
वसु वसुधा को पाकर स्वामी, शाश्वत सिद्धी पद पाया।
निज वसु गुण को पाने हेतू, भक्त शरण तव पद आया।।
जिन चेतन के हर प्रदेश पर, हे प्रभु! तुमे बिठाता हूँ।
मंगल कारक, दोष प्रहारक, तव गुण पूज रचाता हूँ।।

दोहा

आह्वानन करता प्रभू, मम उर हो तव वास।
खास दास की आस ये, चरणनि मिले प्रवास।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(छंद–चउबोला)

वीतराग निर्ग्रंथ तपोधन तव, मन सम ये निर्मल नीर।
जन्म जरा मृतु मूल नाशकर, देता भवोदधि का तीर।।

मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप का नाश जगत में, शीतल चंदन नित करता।
तव पद में ये गंध चढ़ाकर, पाप ताप मैं निज हरता।।
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरक सम अक्षत तंदुल मैं, जिन पद में अपर्ण कर दूँ।
जिन पद में मैं निज पद पाने, मोह मान कर्षण कर दूँ।।
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी और चमेली, गेंदा चंपा सुमन महा।
काम वासना अंतस की मैं, देव चरण में करूँ दहा।।
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः कामबाण-विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पेड़ा घेवर आदिक, बर्फी खाजा पूड़िलाय।
इत्यादिक पकवान चढ़ाकर, नाचुँ गाऊँ मोद मनाय।।

मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न थाल में घृत के दीपक, लेकर भवि जिनालय जाय।
जगमग जगमग करत आरती, मोह तिमिर तुरत मिट जाय॥
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कर्पूर लौंग शुभ, धूप दशांगी मन हरषाय।
वैश्वानल खेऊँ निशदिन मैं, कर्म कलंक सभी जल जाय॥
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल अरु बादाम सुपारी, एला दाड़िम द्राक्षा लाय।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय॥
मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः महामोक्ष-फल-प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर और मलयागिरि चंदन, तंदुल सुमन चरु ले आय।
दीप धूप फल रत्नथाल ले, जिन चरण में पूज रचाय॥

मुनिसुव्रत जिननाथ जगत्पति, दोष सकल ही नाश करो।
मेरी भव-भव की पीड़ा को, स्वामी जी अति शीघ्र हरो॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

इन्द्रों ने मिलकर किये, कल्याणक तव पाँच।
भविजन को वृष बांध दे, पहुँचे शिवपुर साँच॥

(छंद-चौपाई)

जय श्री मुनिसुव्रत गुण आगर, तुम धर्मामृत के शुभ सागर।
नाथ त्रिलोकी हैं सुख कंदा, तुमको पूजै सुर मुनि वृंदा॥1॥
योगीश्वर तव ध्यान लगाते, निज वैभव निज में पा जाते।
अरुण वरण शोभे शिव संगा, सत्तर धनु शुभ देह उतंगा॥2॥
रोग शोक अघ विघन नशावें, तव पद पूजि नाक पद पावें।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, जीव मात्र के परम हितेश्वर॥3॥
पद्मा माता शुभ गुणवंती, इंद्र पूज्य वत्सल वृषवंती।
श्री सुमित्र तव तात् सुज्ञानी, दया शील नित पात्र सुदानी॥4॥
राज त्यागि वैराग्य संभाला, मेटा राग द्वेष अघ काला।
मति श्रुत अवधि सुशोभित स्वामी, मनपर्यय प्रगटा जगनामी॥5॥
द्वादश तपधारी मुनिराजा, घाति कर्म नाशै जिनराजा।
दर्शन ज्ञान नंत बलधारी, शाश्वत आत्म सौख्य हितकारी॥6॥
मागध अंग वंग शुभ देशा, विदर्भ, दशार्ण, कलिंग देशा।
सौराष्ट्र मालवा पांचाली, दिव्य देशना दी खुशाली॥7॥

परमौदारिक पावन देहा, भव्य जीव लखि बने विदेहा।
द्वादशांग वाणी तुम भाषी, लोकालोक सुतत्त्व प्रकाशी।।8।।
सकल अघातिय, कर्म विनाशे, सिद्ध महाफल आप सुभाषे।
काल अनंत रहे शिवलोका, धरे ध्यान वे होंय अशोका।।9।।

घत्ता

सुर नर मुनि वंदत, पाप निकंदत, तीर्थंकर त्रैलोकपती।
भव भाव विहंडित, निजगुण मंडित, जय जय शाश्वत सिद्धजती।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

मुनिसुव्रत जिन चरण युग, जो पूजें धरि प्रीत।
भवदधि तिर वह बन सके, मुक्तिरमा का मीत।।

।।अथ प्रथमवलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपामि।।

प्रथम वलय

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

(छंद-चउबोला)

मति श्रुतावधि मनः पर्यय औ, केवल ज्ञानावरण करम।
ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता बन तुमने, पाया है जिन आत्म धरम।।
ध्यान ध्येय ध्याता बन तुमने, ज्ञान नंत केवल पाया।
ऐसे नंत बोध को पाने, भक्त शरण में है आया।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञान-गुण-सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि द्वादश तप द्वारा, दर्शनावरण नाश किया।
लोकालोक सकल अवभासी, दृगानंत तुम प्राप्त किया।।
दर्शनावरणी की नव प्रकृति, मूल नाश निज दृष्ट हुए।
दृष्ट अदृष्ट सकल अवलोकी, मुनिसुव्रत जिन इष्ट हुए।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शन - गुण - सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम तप के तीव्र खड़ग से, राग द्वेष संहार किया।
दर्शन औ चारित्र मोह का, हे जिन तुमने नाश किया।।
सकल मोह को नाश पूज्य जिन, सुखअनंत तुम पाया है।
निज शाश्वत सुख पाने हेतु, नंदि शरण में आया है।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुख - गुण - सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान लाभ भोगोपभोग वीर्यान्तराय सबको जानो।
ये पाँचों हैं दुख के कारण, ऐसा तुम निश्चय मानो।।
निज सुशक्ति अनुसार भव्य जो, त्याग तपस्या निज करते।
वही अनंत शक्ति को पाकर, मुक्ति रमा श्री को वरते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतबल-गुण-सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चार घातिया नाश कर, आतम गुण प्रकटाय।
उन चतुष्टय को पाने, हम प्रभु के गुण गाय।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचतुष्टय-गुण-सहिताय अर्हत्परमेष्ठिने श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपामि।।

द्वितीय वलय

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(तर्ज–नरेन्द्रं फणेन्द्रं....)

अशोका तरू भव्य के शोक हर्ता,
जिनाश्रित् जनों को है शिव सौख्य कर्ता।
सकल शोक हरने मैं जिनवर को ध्याऊँ,
प्रभू चर्ण में मैं विशुद्धी बढ़ाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक–तरु–सत्प्रातिहार्यगुण–मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणियों से चित्रित शुभासन पे राजे,
सुभव्य जो बंदे वो आतम में साजे।
प्रभु पीठिका की मैं पूजा रचाऊँ,
जलादि चढ़ाकर मैं निज पद को पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन–सत्प्रातिहार्यगुण–मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चमर यक्ष दोइ ओर ढोरें,
करें भक्ति नृत्य प्रभु को निहोरें।
चतुःषष्टि ऋद्धि को तुमसे मैं पाऊँ,
मुनिसुव्रत जिन को मैं अर्घ चढ़ाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं चामर–सत्प्रातिहार्यगुण–मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय छत्र सिर पै सदा ऐसे भासे,
ग्रह भानि मध्य में इंदु प्रकाशे।
त्रैलोक्य स्वामी की भक्ति रचाऊँ,
जिनवर के चरणों में शीश नवाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँ ओर नभ में सु भेरी है बाजे,
सुयश गाए प्रभु का जो आसन पे राजे।
ये रोगादि नाशक है दुष्टाष्ट घाती,
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ मिले मोक्ष पाती।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभि-सत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पादि तरु पुष्प मनहर ये सोहें,
जो आसन्न भव्यों के चित्तों को मोहें।
चढ़ा पुष्प आदि मैं पुण्य कमाऊँ।
निजातम की कलियों को नित ही खिलाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु देह की आभा मिथ्यात्व नाशे,
जो आतम प्रदेशों में ज्ञान प्रकाशे।
सुभव्यों से पूजित भामण्डल है प्यारा,
है सौ-सौ नमस्कार इसको हमारा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल-सत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि जिन की भवि पाप हरती,
हृदय में सदा ये सुखानंद भरती।

है अमृतमयी नाथ की दिव्य वाणी,
ये दर्शाए शिवपथ मिले मुक्ति रानी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

प्रातिहार्य वसुजान ये, नित मंगल सुखदाय।
रोगशोक सब दूर हों, जो प्रभु के गुण गाए॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टसत्प्रातिहार्यगुण-मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपामि॥

तृतीय वलय

सोलहकारण भावना के अर्घ्य

(छंद-नरेन्द्र/जोगीरासा)

(तर्ज-पीछी से पीछी)

दर्श विशुद्धि धरें जे प्राणी, ते शिवपद को पावें
वसु गुण युत निर्मल चित होकर, सारे दोष नशावें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नाशकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धि-भावनायाः फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान विनय तप चारित, पंचाचार जु पालें।
अहंकार मद मोह शाठ्यता, सारे ही अघ टालें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नता-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिक्रम व्यतिक्रम अतीचार औ, अनाचार भी टालें।
ब्रह्म लीन रहकर जो प्राणी, शील सदा शुभ पालें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट अंग युत ज्ञान पंच विधि, तीनों दोष नशाकर।
नित्य निरंतर ज्ञान सु पावे, गुरु को हृदय बसाकर॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग सदा वैरागी, धर्मी गुण अनुरागी।
संयम आतुर धर्म क्षुधातुर, सर्व पाप के त्यागी।
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं संवेगभावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करना त्याग शक्ति के माफिक, औषधि ज्ञान अहारा।
प्राणी जन को अभय प्रदाता, भव्यों के आधारा॥

सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्याग–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि द्वादशतप जग में, सब ही कर्म जलावें।
मन वच तन से निर्मल चित हो, तप कर शिव पद पावें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपभावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आधि व्याधि सु उपाधि छोड़कर, जो निज आतम ध्याते।
निश्चय संबोधी को पाकर, भव का भ्रमण मिटाते॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधि–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि अरु अनगार यति जन की जो सेवा करते।
साधर्मियों की वैयावृत्ति, करके सुमुक्ति वरते॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्य–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, की सुभक्ति जो करते।
अतिशय पुण्य कमाकर प्राणी, पाप ताप सब हरते॥

सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्ति–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार सदा जो पालें, शिष्यों को सिखलावें।
वे आचार्य धर्म के नायक, मोक्षमार्ग दरशावें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्ति–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग के श्रुतधर मुनिजन, पाठक गुरु कहलावें।
उनकी सेवा भक्ति सु करके, ज्ञान कोष भवि पावें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्ति–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी और साधु जन को, जो निज हृदय बसाकर।
आतम निधि को निश्चित पाते, वे मुनि कर्म नशाकर॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचन भक्ति–भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ–जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक धर्म कार्य को, जो भविजन नित पालें।
श्रावक श्रमण धर्म अपनाकर, अशुभ कर्म को टालें॥

सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणि-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दृष्टि जीव जगती में, नित जिन धर्म प्रकाशें।
तत्त्व विज्ञ हो सर्व हितैषी, मुक्ति सुभाजक भासें॥
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावना-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल भाव सदा धर्मी से, बिना स्वार्थ के रखते।
रागद्वेष मोहादिक तज के, आतम के गुण चखते।
सोलह कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
द्रव्य, भाव, नोकर्म नशाकर, मुक्ति सुनिश्चित पाता॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्व-भावनाया: फलसंयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नम: अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

पद द्रव्यों को छोड़ स्वयं मुख मोड़ ले।
जिनवर के चरणों से नाता जोड़ ले॥
सोलह कारण भावें अनुपम प्रीति है।
तीर्थंकर पद पाने की इह रीति है॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशकारण-भावनाया: फल-संयुक्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्थ वलय

गीतिका छंद

संसार के सब जीव दुख को, भोगते हैं नित्य ही।
आधीनता ये कर्म की, निष्कर्मता है सत्य ही॥
मैं मानसिक संताप सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मानसिकविकारोद्‌भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस देह में रोगादि नाना उदित होते हैं सदा।
जो मुदित मन पूजा करें वे, दुःख पाते ना कदा॥
मैं देह के रोगादि सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायिकविकारोद्‌भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों की शक्ति की कमी भी, कष्ट देती जीव को।
अस्पष्ट क्रूर कठोर ध्वनि भी, दुःख देती जीव को॥
मैं वचन के बहु दोष सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं वाचनिकविकारोद्‌भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन हीन होकर मनुज जग में, दुख ही दुख भोगता।
इच्छानुकूल विषय सुखों की, भोगता जु वियोगता॥
धनहीन निर्धन की दशा जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यापारवृद्धिरहितोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

ये भूत प्रेतादिक जगत में, कष्ट देते हैं सदा।
जिन चरण की अर्चा करें तो, दुःख ना देवें कदा॥
उपसर्ग सब भूतादि के जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतप्रेतपिशाचादिभय-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब राज्य वैभव भोग सम्पति, विघ्न के कारण कहे।
तीर्थेश की शुभ भक्ति पूजन, विघ्न बाधा सब दहे॥
विघ्न सारे विश्व के जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविघ्न-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जु महाभयंकर कुष्ट आदिक, रोग गलित घिनावने।
संक्लेशकारक दुखद निश्चित, पाप के उपजावने।
मैं उन सभी रोगादि को जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं भीम-भगन्दर-गलित-कुष्ट-गुल्म-जलोदर-रक्तपित्त-कफवात स्फोटकाद्युपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन इष्ट सुख जन संपदा से, जीव बहुसुख मानता।
व वियोग के कारण सुनिश्चित, घोर दुख वह ठानता॥
सब दुक्ख इष्ट वियोग के जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं इष्टवियोगाद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन-इष्ट का संयोग भी तो, दुख देता सर्वदा।
अरु योग इष्टानिष्ट का मिलता यहाँ पर वर्वदा।
मैं निष्टकारक योग सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनष्टिसंयोगाद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दुष्ट नवग्रह जगत में नित, जीव को दुख देत हैं।
अर्हत् प्रभू की अर्चना ही, सर्व सुख का हेतु है॥
मैं वेदना नवग्रहों की जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥10।

ॐ ह्रीं अर्हं दुष्टग्रहादि-उपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तलवार तीर सुभाल कुंतल, चक्र आदिक घातकी।
जु प्रहार होता देह पे तब, आर्त होता पातकी॥
मैं शस्त्र-अस्त्र प्रहार सब, जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं विविधायुधोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनी भयंकर प्रज्ज्वलित सर्वस्व ही करती स्वहा।
जिन नाम शीतल नीर सम शुभ, शांति तव होती वहाँ॥
दावाग्नि के संताप सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं दावानलोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जु प्रलयकारी दुखद मारुद महाभयंकर भासती।
उत्तुंग तरुवर तक गिराती, जीव आदि विनाशती॥
मारुत जनित ये कष्ट सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रचंडपवनोद्भवोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्काल दुर्भिख ईति भीती, ताप की कारण कही।
फैले सुभिक्षा ओर सब, समृद्ध होवे ये मही॥
दुष्काल के संताप सब, जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुर्भिक्षोपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिन पुत्र के दंपति जगत में, नित्य ही दुख भोगता।
जिन चरण की शुभ वंदना से, पाता मुक्ति योग्यता॥
सुत हीनता के कष्ट सब जिनभक्ति से चूरण करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुत्रविहीनत्वदु:ख-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की आराधना जिनसम बनाती है स्वयं।
आनंद चिद पा भव्य वो तनुवात में करता शयन॥
मैं अनंत आनंद का वरण जिनदेव भक्ति हि से करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिदानन्दकरणसमर्थाय-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य की त्रय काल की बातें सभी वो जानता।
प्रत्येक श्वांस सु संग जो 'जिन' नाम को उच्चारता॥
असहाय केवल ज्ञान को जिनभक्ति से प्रकटित करूँ।
सिरी मुनिसुव्रतनाथ की अर्चा करूँ सिद्धी वरूँ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्केवलज्ञान विभूतिपदप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छंद-अडिल्ल)

तर्ज-सोलहकरण भाये....

छवी बसे त्रैलोक्य नाथ की नैन में,
रहे उन्हीं का ध्यान सभी दिन रैन में।
शीघ्र नेत्र के रोग भक्ति से दूर हों,
दर्शनावरणी कर्म सब चकचूर हों॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रपीड़ा-विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की निर्झरणी प्रभुपद में बहती,
अरु वाणी प्रभु की महिमा को हि कहती।

भव्य जीव वह दुर्लभ दीक्षा ग्रहण करे,
मृत्यु बना महोत्सव भव ये सफल करे॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीक्षासमाधिसुखप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के पद कमलों की शुभ आराधना,
शिव मग पर बढ़ने की है प्रस्तावना।
मम चेतन के हर प्रदेश पर आप्त हों,
नमन करूँ प्रभु तव गुण मुझको प्राप्त हों॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनगुणसम्पत्ति-प्राप्तये श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमंकर निजदेव प्रभु की है वाणी,
भवि जीवों के हित अहर्निश कल्याणी।
धरि हृदय में वाणी बोले जयकारा,
न हि पराजय बहे जीत की रस धारा॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुषु मध्ये सर्वत्रविजय-प्राप्तये श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनभक्ति में प्रतिपल हो मन अनुरंजित,
रोम रोम जिनभक्ति से ही अभिसिंचित।
मुनिसुव्रत प्रभु का मन में गुणगान हो,
ऋद्धि-सिद्धि सब प्राणी को वरदान हो॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वऋद्धि-सिद्धि-प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अतिशययुक्त प्रभू की अर्चना,
पाय तुरत जिसकी हो मन में अर्थना।

जिनभक्ति उत्कृष्ट जगत में है मानी,
आगम अरु पुराणों से हमने जानी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोवांछित फलप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बने नींव भक्ति पूजन अभ्यर्थना,
मानुष भव का वरना कोई अर्थ ना।
दर्श विशुद्धी आदिक सोलह भावना,
चिंतन करूँ निरंतर चित हो पावना।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशकारणभावना साधन बल प्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्त सदा जिनचरणों में अनुरक्त हो,
हर चैतन्य प्रदेश आपका भक्त हो।
प्रभू भक्ति से उदर रोग सब नष्ट हों,
प्रभू भक्त को कभी न कोई कष्ट हो।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वउदररोग विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति रूपी अमृतबूंदों का वर्षण,
आत्म गुण बगिया का करता संवर्द्धन।
नंत चतुष्टय प्रकट यही शुभ कामना,
तुम सम बनने की परमोत्तम भावना।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मगुण-प्रकटाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित्ताम्बुज में नाथ नित यदि हों अंकित,
भव्य निरंतर करते भक्ति निःशंकित।

चिंतामणि सम भक्ति तुरत हि फल दाता,
चिंतन जु करता भवि मन में वो पाता।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणि समानचिन्तितफलप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू पर देवों द्वारा जल हो वर्षित,
प्रभु ओर यदि जीवन डोरी आकर्षित।
भौतिक निःश्रेयस सुख भी अविराम है,
भावों की शुद्धी का ही परिणाम है।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं मेरुशिखरस्नानयुक्तपदप्रदाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीची हो उत्ताल चित्त में भक्ति की,
रहे भावना सिद्ध अंगना मुक्ति की।
दुर्बुद्धी का नाश व निर्मल ज्ञान हो,
प्रतिपल रहे विशुद्धी ना अभिमान हो।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं ममात्मनिज्ञान-जागृताय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिह्वा पर अविरल प्रभुवर का नाम हो,
और हृदय मुनिसुव्रत प्रभु का धाम हो।
हृदय रोग नश जाय तुरत ही भक्ति से,
प्रभुवर के शुभ नाम गुणों की शक्ति से।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृदयरोग-विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वबद्ध कर्मों से पीर लेखी हो,
शनिग्रह निमित बने असाता देखी हो।

मुनिसुव्रत प्रभु नाम इक ही काफी है,
मानी शनि ने हार माँगी माफी है॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं शनिग्रहअनिष्ट निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं कभी भी अयशः कीर्ति टिक सकता,
सूर्य के आगे भी तम क्या रह सकता।
हृदय पटल पर संस्थित जिसके नाथ हों,
सूर्यसमा शुभ कीर्ति जगत विख्यात हो॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपकीर्त्युपद्रव-निवारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छंद

जय-जय जिनदेवं, सुरकृत सेवं, जगत पिता त्रैलोक्यपति।
हम शीश झुकावें, पूज रचावें, मोक्ष दिला दो परमयति॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोपद्रव-विघ्नबाधा-निवारणाय सर्वसुख-शांति-प्राप्तये वीतरागी-सर्वज्ञ श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र

(108 बार जाप करें)

ॐ ह्रीं अर्हं शनिग्रह संबंधी सर्व-पीड़ा-विनाशनाय श्री मुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा

पाप पंक में लीन भवि, कर सुभक्ति हों मुक्त।
मुनिसुव्रत जिन अर्चना, मही सदा उपभुक्त॥

(पद्धरी छंद)

जय मुनिसुव्रत जिनराज प्रभु, सब अघ दुख नाशक दिव्य विभु।
जय कर्म विनाशक परमदेव, सुर नर मुनि करते चरण सेव॥1॥
जय गुण वारिधि सुखकर जिनेश, भवि चरण पूजि सुख लहि हमेश।
जय मुनिसुव्रत त्रयजगत नाथ, तुम चरण पाय भवि हों सनाथ॥2॥
जय मुक्ति वधू के कंत ईश, तुम चरण धरें हम नित्य शीश।
जय काम विनाशक मुनिसुव्रत, भव बंध कटे पालें सु-व्रत॥3॥
जय पाप क्षयंकर महाईश, जिनवर पद जजि भवि हों गुणीश।
जय रत्नत्रय युग हेतु वीर, तुव गुण गौरव लखि नशें पीर॥4॥
जय घाति-अघाति विरहित देव, शिवरमणि वरी तुम स्वयं एव।
जयकर्मचूर सुख देत पूर; रिपु रागद्वेष कीने सुदूर॥5॥
जय रोग शोक भय हीन देव, तव पद विलीन हों नित्यमेव।
जय जन्म जरा मृतु मुक्त कंत, शिवमग दर्शायक कर्महंत॥6॥
जय जीव हितंकर ज्ञान पुंज, सर्वज्ञदेव गुण नित्य कुंज।
जय आत्मबली विधि जीव सूर, हे शांति मूर्ति चैतन्य नूर॥7॥
जय दुक्ख विनाशक वीत द्वेष, हे राग जयी मुनिवर जिनेश।
जय नवग्रह बाधा दूर करो, हे मुनिसुव्रत अघ चूर करो॥8॥
जय हृदय विकाशी परम इंदु, हे गुण गण मंडित नंत सिंधु।

जय तारण तरण सरोज बंधु, हे गत विद्वेषक भव्य बंधु॥9॥

जय यश वर्द्धक तुम शांति भानु, हे आत्म लीन कैवल्य भानु।

जय कर्म विमोचक विश्व भूप, जय ज्ञानमूर्ति शुभ सिद्ध रूप॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशान्तिप्रदाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

जय-जय मुनिसुव्रत, धार महाव्रत, कर्मन आठों, नाश करें।
वसुनंदी प्रणमे, निज में रमने, मुक्ति रमा को, शीघ्र वरें।

पुष्पांजलिं क्षिपामि।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पनमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं भावपूजा - भाववन्दना - त्रिकालपूजा - त्रिकालवन्दना - कृत- कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त - सिद्ध - आचार्य - उपाध्याय - सर्वसाधु- पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग - करणानुयोग - चरणानुयोग - द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि - दशलक्षण - धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः।

जल - थल - आकाश - गुहा - पर्वत - नगरवर्ति - ऊर्ध्व - मध्य - अधोलोकेषु विराजमान - कृत्रिम - अकृत्रिम - जिन - चैत्यालय - जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान - विंशतितीर्थंङ्करेभ्यो नमः। पञ्च - भरत - पञ्च - ऐरावत - दशक्षेत्र - सम्बन्धि - त्रिंशत् - चतुर्विंशतिगत - विंशत - उत्तर - सप्तशत - जिनबिम्बेभ्यो नमः। नन्दीश्वरद्वीप - सम्बन्धि - द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि - अशीति - जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर - कैलाश - चम्पापुर - पावापुर - गिरनार - सोनागिरि - राजगृही - मथुरा - शत्रुञ्जय - तारङ्गा - कुण्डलपुर आदि - सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री - मूढ़बद्री - हस्तिनापुर - चन्देरी - पपौरा - अयोध्या - चमत्कारजी - महावीरजी - पद्मपुरी - तिजारा - आदि - अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे मेरु दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे.... तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं।।
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

वसन्ततिलका

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।।
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।

स्रग्धरा

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

(आर्या छंद)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

दोहा

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥

पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहुं भगवान॥२॥

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥

आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ जिन चालीसा

दोहा

सुव्रत धारक मुनि प्रवर, श्री मुनिसुव्रत नाथ।
सुर नर गणपति के झुके, तव चरणों में माथ॥
जो नाथों के नाथ हैं, सर्व गुणों की खान।
साहस करि जिन गुण कहूँ, दो सुशक्ति भगवान॥

चौपाई

सुखदायक मुनिसुव्रत नाथा, तुम हो सबके भाग्य विधाता।
वीतराग सर्वज्ञ कहाते, आतम हित की बात बताते॥1॥
तुम युदुवंशी तिलक समाना, हो सर्वोच्च प्रथम भगवाना।
तीर्थंकर तुम जग में नामी, नमूँ-नमूँ मुनिसुव्रत स्वामी॥2॥
शनिग्रह पीड़ा परिहारक हो, दुख दरिद्र अघ के नाशक हो।
नंत गुणों के हो भण्डारी, दोष रहित निज आत्म बिहारी॥3॥
तज विमान प्राणत तुम आए, सोमा माता उर पधराये।
सुख निद्रा में मात निहारे, सोलह शुभ सपने जगन्यारे॥4॥
श्रावण वदि द्वितिया जब आई, गर्भमहोत्सव बजी बधाई।
सुर बरसाते रतन बदरिया, सज गई राजगृही नगरिया॥5॥
श्री ह्री आदिक अष्ट देवियाँ, माँ की सेवा में दिन रतियाँ।
कोई ताल मृदंग बजावे, कोय भक्ति संगीत सुनावे॥6॥
अश्विन सुदि द्वादश अघहारी, जन्मे प्रभु जग मंगलकारी।
पिता सुमित्र नृपति हर्षायें, दान किमिच्छिक वो वरषायें॥7॥
सुरपति ऐरावत चढ़ि आए, शचि युत बालक गोद बिठायें।
मेरु शिखर पहुँचे सुरराजे, पाण्डुशिला जिनराज विराजे॥8॥
संख्यातीत देव चित निर्मल, भर लाये क्षीरोदधि का जल।
सहस कलश प्रभु मस्तक ढारे, बोले मुनिसुव्रत जयकारे॥9॥
तव पद कच्छप चिह्न सुशोभित, सहस अष्ट लक्षण मनमोहित।
दस अतिशय युत जनम लिया है, तीन लोक को धन्य किया है॥10॥
मति श्रुत अवधि सुज्ञान समेता, जनम लिया त्रिभुवन के नेता।
श्याम वर्ण तन छवि अतिमनहर, लोकत्रय में अतिशय सुंदर॥11॥
समचतुरस्र प्रभू संठाना, श्रेष्ठ संहनन श्री भगवाना।
जब आई तुम पर तरुणाई, नेक राज कन्या परणाई॥12॥

भोगे भोग विविध परकारा, सुख वैभव का नाहिं पारा।
स्मरण जुआ जब पूरव भव का, तजा भोग सब नश्वर जग का॥13॥
भव तन भोग लगे असुहाने, लगे भावना बारह भाने।
ब्रह्मऋषीश्वर सुरगण आए, तव संस्तुति के गीत सुनाए॥14॥
सुर लाए तब दिव्य पालकी, बिठा राह ले चले गगन की।
शिविका पहुँची नील सुवन में, राजे जहँ प्रभु शुभ चिंतन में॥15॥
छोड़े भौतिक वैभव सारे, केशलोंच करि वसन उतारे।
निर्विकार, सिद्धों को ध्याया, तुमको भेष दिगम्बर भाया॥16॥
वदि बैशाख दशम शुभ आई, हुए सहस नृप युत मुनिराई।
मन पर्यय शुभ ज्ञान उपाया, निज आतम का ध्यान लगाया॥17॥
सुव्रत पंच महा चित धारे, मुनिव्रत दोष रहित विस्तारे।
वर्द्धमान चारित के धारी, मुनि सुव्रत मुनि जय तुम्हारी॥18॥
श्री वृषदत्त नृपति बड़भागी, जिन घर पग धारा मुनि त्यागी।
दिया प्रभु को प्रथम आहारा, पंचाश्चर्य हुये सुर द्वारा॥19॥
ग्यारह मास किया तप दुर्द्धर, ध्यान लीन चर्या में तत्पर।
वीतरागता की सुध आई, आत्म साधना ही सुखदाई॥20॥
समताधर बारह तप तपते, परीषह जय बाइस तुम सहते।
शुक्ल ध्यान की अनल जलाके, कर्म खपाए चित्त लगाके॥21॥
फाल्गुन वदि षष्टी अतिपावन, उदित हुआ केवल रवि भावन।
हुए सकलदर्शी जिनराई, नंत चतुष्टय युत प्रभुताई॥22॥
समवशरण दैवेन्द्र रचाया, अनुपम वैभव है दर्शाया।
शोभा जिसकी शब्द अतीता, राजे तहँ तुम भविजन मीता॥23॥
परमौदारिक देह सु प्यारी, बारह सभा लगी विस्तारी।
कमलासन पर अधर विराजे, सहस पंच धनु नभ में साजे॥24॥
प्रातिहार्य वसु युत परमेश्वर, नंत चतुष्टय युक्त जिनेश्वर।

द्रव्य सुमंगल मंगलकारी, महिमा मण्डित आत्म पुजारी।।25।।
दोष अठारह रहित जिनेशा, देते सबको हित उपदेशा।
अठ दस गणधर हैं सुज्ञानी, प्रमुख मल्लि जी झेले वाणी।।26।।
मृकुटि यक्ष गावें यश गाथा, अपराजित यक्षिणी सु ज्ञाता।
अजितञ्जय नृप जिनपद ध्यानी, जिनने सुनी तव अमृतवाणी।।27।।
देव मनुज और पशु विचारे, तुमने लाखों प्राणी तारे।
जो तव नाम हृदय में ध्याता, मनवांछित फल वो पा जाता।।28।।
सर्व देश में किया विहारा, पहुँचे शिख सम्मेद मँझारा।
निर्जर कूट सु किया बसेरा, जर्जर हुआ कर्म का ढेरा।।29।।
माघ कृष्ण तेरस अघहारी, मुक्तिपुरी से रिश्तेदारी।
कर्म जाल का बंधन तोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।।30।।
तुम हो प्रभु सब सिद्धी दायक, कहलाते शिवपथ के नायक।
जिन-जिन का है तुमसे नाता, भाग्यवान जग में कहलाता।।31।।
पंचकल्याणक निधि सुयुक्ता, सुर वंदित गत दोष पवित्रा।
श्रवण नखत की महिमा गाई, कल्याणक कल्याण प्रदायी।।32।।
नाम आपका बहुत बड़ा है, हर संकट में साथ खड़ा है।
शनि अरिष्ट हारी भगवंता, करते सब दुःखों का अंता।।33।।
रोतों को तुमने हि हँसाया, गिरते को तुमने हि उठाया।
कृपा सिन्धु मम ओर निहारो, निज शिशु को भी शीघ्र उबारो।।34।।

दोहा

चालीसा चालीस दिन, कर चालीसहि बार।
सुख सम्पति पाओ अचल, मुनिसुव्रत चित धार।
पावन भक्ति सु नीर से, कर्म मैल धुल जाय,
स्वर्गों के सुख भोगकर, मोक्ष संपदा पाय।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान की आरती

ॐ जय मुनिसुव्रत देवा, जय मुनिसुव्रत देवा।
भव अंबुधि में भटके जन की, पार करो सेवा।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा।।टेक।।

नृप सुमित्र घर जन्म लियो तब, देव सभी आए।
कर दर्शन त्रैलोक्य नाथ का, अति ही हर्षाये।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।1।।

देख-देख सोलह स्वप्नों को, माँ पद्मा हर्षी।
पंद्रह महिने नृप आंगन में, हुई रत्न वृष्टि।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।2।।

तुमही श्री जिनदेव हमारे, मात-पिता जैसे।
जिसके हो प्रभु नाथ स्वयं ही, हो अनाथ कैसे।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।3।।

शक्ति दो जिनदेव बनूँ मैं, सिद्धों का साथी।
नंत नमन चरणों में करता, सिद्धालय वासी।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।4।।

पाप मेघ हटते उनके जो, नीराजन करते।
तव पद के अनुरागी निश्चित, मुक्ति रमा वरते।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।5।।

श्रद्धा भक्ति युक्त प्रभु के जो द्वारे आता।
निःश्रेयस अभ्युदय उत्तम, भव्य सौख्य पाता।।
ॐ जय मुनिसुव्रत देवा...।।6।।

निर्वाणकांड (भाषा)

–कवि श्री भैया भगवतीदास जी

दोहा

वीतराग वंदौं सदा, भावसहित सिरनाय।
कहौं कांड-निर्वाण की, भाषा-सुगम बनाय॥1॥

चौपाई छंद

'अष्टापद' आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य 'चंपापुरि' नामि।
नेमिनाथ स्वामी 'गिरनार', वंदौ भाव-भगति उर-धार॥2॥

चरम-तीर्थंकर चरम-शरीर, 'पावापुरि' स्वामी-महावीर।
'शिखर-सम्मेद' जिनेश्वर बीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥3॥

वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
'नग सु तारवर' मुनि उठकोड़ि, वंदौं भाव-सहित कर-जोड़ि॥4॥

श्री 'गिरनार'-शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्भु-प्रद्युम्न कुमर द्वय भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय॥5॥

रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति-मँझार, 'पावागढ़' वंदौं निरधार॥6॥

पांडव-तीन द्रविड़-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्री 'शत्रुंजय-गिरि' के सीस, भाव-सहित वंदौं निश-दीस॥7॥

जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्री 'गजपंथ' शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहुँकाल॥8॥

राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, 'तुंगीगिरि' वंदौं धरि ध्यान॥9॥

नंग-अनंगकुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये 'सोनागिरि' शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईश॥10॥

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये 'रेवा-तट' सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम-हुलास॥11॥

रेवानदी 'सिद्धवर-कूट', पश्चिम-दिशा देह जहँ छूट।
द्वय-चक्री दश-कामकुमार, उठकोड़ि वंदौं भव-पार॥12॥

'बड़वानी' बड़नयर सुचंग, दक्षिण-दिशि 'गिरि-चूल' उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भवसायर-तर्ण॥13॥

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, 'पावागिरिवर' शिखर-मँझार।
चेलना-नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वंदौं नित तास॥14॥

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम-दिशा 'द्रोणगिरि' रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ॥15॥

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री 'अष्टापद' मुक्ति-मँझार, ते वंदौं नित सुरत-संभार॥16॥

अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ 'मेंढ़गिरि' नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित-लाय॥17॥

वंसस्थल-वन के ढिंग होय, पच्छिम-दिशा 'कुंथुगिरि' सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥18॥

जसरथ-राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
'कोटिशिला' मुनि कोटि-प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान॥19॥

समवसरण श्री पार्श्व-जिनंद, 'रेसिंदीगिरि' नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज॥20॥

'मथुरापुरी' पवित्र-उद्यान, जम्बूस्वामी जी निर्वाण।
चरम-केवली पंचमकाल, ते वंदौं नित दीनदयाल॥21॥

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित-प्रति वंदन कीजे तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय॥22॥

संवत सतरह-सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल॥23॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्री मुनिसुव्रतनाथजिन-स्तवन

(वैतालीय छंद)

अधिगत-मुनि सुव्रत-स्थिति-र्मुनि-वृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः।
मुनि-परिषदि निर्बभौ भवा-नुडु-परिषत्परिवीत-सोमवत्॥1॥

अन्वयार्थः (अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिः) जिन्होंने मुनियों के उत्तम व्रतों की स्थिति को अधिगत-सुनिश्चित अथवा प्राप्त कर लिया है, जो **(मुनि वृषभः)** मुनियों में श्रेष्ठ हैं और जो **(अनघः)** चार घातिया कर्म रूपी पाप से रहित हैं ऐसे **(भवान्)** आप **(मुनिसुव्रतः)** 'मुनिसुव्रत' इस सार्थक नाम को धारण करने वाले जिनेन्द्र **(मुनिपरिषदि)** समवशरण के बीच मुनियों की सभा में **(उडुपरिषत्परिवीतसोवत्)** नक्षत्रों के समूह से घिरे हुए चन्द्रमा के समान **(निर्बभौ)** सुशोभित हुए थे।

भावार्थ–जिन्होंने मुनियों के उत्तम व्रतों की स्थिति को सुनिश्चित अथवा प्राप्त कर लिया है, जो मुनियों में श्रेष्ठ हैं और जो चार घातिया कर्म रूपी पाप से रहित हैं ऐसे आप 'मुनिसुव्रत' इस सार्थक नाम को धारण करने वाले जिनेन्द्र समवशरण के बीच मुनियों की सभा में नक्षत्रों के समूह से घिरे हुए चन्द्रमा के समान सुशोभित हुए थे।

परिणत-शिखि-कण्ठ-रागया, कृत-मद-निग्रह-विग्रहा भया।
तव जिन! तपसः प्रसूतया, गृह - परिवेष - रुचेव शोभितम्॥2॥

अन्वयार्थः (कृतमदनिग्रह) काम अथवा अहंकार का निग्रह करने वाले **(जिन)** हे मुनिसुव्रत जिनेन्द्र! **(परिणतशिखि-कण्ठरागया)** तरुण मयूर के कण्ठ के समान वर्णवाली **(तपसः**

प्रसूतया) तप से उत्पन्न **(तव विग्रहाभया)** आपके शरीर की आभा-चारों ओर फैलने वाली दीप्ति **(ग्रहपरिवेषरुचेव)** चन्द्रमा के परिवेश-परिमण्डल की दीप्ति के समान **(शोभितम्)** सुशोभित हुई थी।

भावार्थ–काम अथवा अहंकार का निग्रह करने वाले हे मुनिसुव्रत जिनेन्द्र! तरुण मयूर के कण्ठ के समान वर्णवाली तप से उत्पन्न आपके शरीर की आभा-चारों ओर फैलने वाली दीप्ति चन्द्रमा के परिवेश-परिमण्डल की दीप्ति के समान सुशोभित हुई थी।

शशि-रुचि-शुचि-शुक्ल-लोहितं, सुरभितरं विरजो निजं वपुः।
तव शिवमतिविस्मयं यते! यदपि च वाङ्मनसीयमीहितम्॥3॥

अन्वयार्थः (यते) हे महामुनिराज! **(शशिरुचिशुचिशुक्ल-लोहितं)** चन्द्रमा की किरणों के समान निर्मल एवं सफेद खून से युक्त **(सुरभितरं)** अत्यन्त सुगन्धित और **(विरजः)** रज रहित-मल रहित जो **(तव)** आपका **(निजं वपु)** अपना शरीर था वह **(शिवं)** अत्यन्त शुभ तथा **(अतिविस्मयं)** अत्यन्त आश्चर्य करने वाला **(च)** और **(वाङ्मनसीयम् अपि)** वचन तथा मन की भी **(यत् ईहितं)** जो चेष्टा **(तदपि)** वह भी **(अतिविस्मयं)** अत्यन्त आश्चर्य करने वाली है।

भावार्थ–हे महामुनिराज्! चन्द्रमा की किरणों के समान निर्मल एवं सफेद खून से युक्त अत्यन्त सुगन्धित और रज रहित-मल रहित जो आपका अपना शरीर था वह अत्यन्त शुभ तथा अत्यन्त आश्चर्य करने वाला और वचन तथा मन की भी जो चेष्टा वह भी अत्यन्त आश्चर्य करने वाली है।

स्थिति-जनन-निरोध-लक्षणं, चर-मचरं च जगत् प्रतिक्षणम्।
इति जिन! सकलज्ञ-लाछनं, वचनमिदं वदतांवरस्य ते॥4॥

अन्वयार्थः (जिन) हे जिनेन्द्र! **(चरं)** चेतन **(च)** और **(अचरं)** अचेतन रूप **(जगत्)** संसार **(प्रतिक्षणं)** क्षण-क्षण में **(स्थितिजनन-निरोधलक्षणं)** ध्रौव्य, उत्पाद और व्यय रूप लक्षण से युक्त है **(इति इदं)** इस प्रकार का यह जो **(वदतांवरस्य ते)** वक्तृप्रवर आपका **(वचनं)** वचन है **(तत्)** वह **(सकलज्ञलाञ्छनं)** सर्वज्ञ का चिह्न है आपकी सर्वज्ञता का द्योतक है।

भावार्थ–हे मुनिसुव्रत जिनेन्द्र! चेतन और अचेतन रूप संसार क्षण-क्षण में ध्रौव्य, उत्पाद और व्यय रूप लक्षण से युक्त है इस प्रकार का यह जो वक्तृप्रवर आपका वचन है वह सर्वज्ञ का चिह्न है आपकी सर्वज्ञता का द्योतक है।

दुरित - मल - कलं-कमष्टकं, निरुपम - योग - बलेन - निर्दहन्।
अभवदभव - सौख्यवान भवान्!, भवतु ममापि भवोपशान्तये॥5॥

अन्वयार्थः हे भगवन्! **(निरुपमयोगबलेन)** अनुपम शुक्लध्यान के बल से **(अष्टकं)** आठ प्रकार के **(दुरितमलकलंकम्)** कर्म मल रूप कलंक को **(निर्दहन्)** जलाते हुए **(भवान्)** आप **(अभवसौख्यवान्)** मोक्ष सम्बन्धी अतीन्द्रिय सुख से युक्त **(अभवत्)** हुए हैं ऐसा आप **(ममापि)** मुझ (समन्तभद्र) के भी **(भवोपशान्तये)** संसार की उपशान्ति के लिए **(भवतु)** होवें।

भावार्थ–हे भगवन्! अनुपम शुक्लध्यान के बल से आठ प्रकार के कर्ममल रूप कलङ्क को जलाते हुए आप मोक्ष सम्बन्धी अतीन्द्रिय सुख से युक्त हुए हैं ऐसे आप मुझ (समन्तभद्र) के भी संसार की उपशान्ति के लिए होवें।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का जीवन परिचय

वंश	–	यादव
माता	–	सोमा/पद्मावती
पिता	–	श्री सुमित्र
जन्मस्थली	–	राजगृही
चिह्न	–	कछुआ
वर्ण	–	श्याम आभायुक्त
आयु	–	30 हजार वर्ष
अवगाहना	–	20 धनुष
गर्भ कल्याणक तिथि	–	श्रावण कृ. 2
गर्भ कल्याणक नक्षत्र	–	श्रवण
जन्म कल्याणक तिथि	–	आश्विन शु. 12
जन्म तिथि विशेष	–	मार्ग कृ. 12
जन्म कल्याणक नक्षत्र	–	श्रवण
तप कल्याणक तिथि	–	वैशाख कृ.–9/10
दीक्षा तिथि विशेष	–	वैशाख कृ. 9
तप कल्याणक नक्षत्र	–	श्रवण
केवलज्ञान कल्याणक तिथि	–	फाल्गुन कृ. 6
केवलज्ञान कल्याणक नक्षत्र	–	श्रवण
मोक्ष कल्याणक तिथि	–	फाल्गुन कृ. 12
निर्वाण तिथि विशेष	–	माघ शु. 13
मोक्ष कल्याण नक्षत्र	–	श्रवण/पुष्य

मोक्ष स्थली	–	सम्मेद शिखर
मोक्ष कूट	–	निरजर कूट
वैराग्य का कारण	–	जातिस्मरण
यक्ष	–	भृकुटि
यक्षिणी	–	अपराजिता
दीक्षावन	–	नील
दीक्षा वृक्ष	–	चंपक
सहदीक्षित	–	1000
छद्मस्थ काल	–	11 मास
सर्वऋषि	–	30000
सर्वआर्यिका	–	50 हजार
कुल गणधर	–	18
मुख्य गणधर	–	मल्लि
मुख्य श्रोता	–	अजितञ्जय
मुख्य आर्यिका	–	पूर्वदत्ता/पुष्पदंता
प्रथम आहार दाता	–	वृषभदत्त
कुल श्रावक	–	1 लाख
कुल श्राविका	–	3 लाख
केवली काल	–	7499 वर्ष + 1 मास
तीर्थकाल	–	5447400 वर्ष
देवगति से पूर्व भव का नाम	–	वैश्रवण
पूर्व भव में पिता	–	श्री वरधर्म (श्री नाग)
इनके तीर्थकाल के कामदेव	–	वसुदेव
कामदेव का मोक्ष	–	सिद्ध भये (सिद्धवर कूट)

परम्पराचार्य अर्घावली

वीतराग जिनगिरि से निसृत द्वादशांग जिनवर वाणी,
गणधर सूरी ज्ञान कुण्ड से झरती पीते भवि प्राणी।
मुनिराजों ने जिन्हें स्वयं ही शब्दों में लिपिबद्ध किया,
प्रथम चरण अरु करण द्रव्य को अर्घ चढ़ा हम नमन किया।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव द्वादशांग मय सरस्वती देव्यै: नम: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उन आचार्यों के चरणों में, झुका रहे अपना माथा।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, हो जाता निज से नाता।।
षट्खण्डागम आदि सिद्धांतों, को जिनने लिपिबद्ध किया।
पुष्पदंत, धरसेन, भूतबली आचार्यों से ज्ञान लिया।।

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आचार्य भगवन् श्री-धरसेन-पुष्पदंत-भूतबलि परमेष्ठिभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मरसिक सिद्धान्त मनीषी आगम के मर्मज्ञ महान,
परम तपस्वी अविचल ध्यानी निजानंद करते रसपान।
निज आतम कल्याणहेतु हम करते पूजन अरु गुणगान,
कुंद कुंद आचार्य श्री को नमन करूँ जो हैं भगवान।।

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्मरसिक आचार्य भगवान् श्री कुंदकुंद स्वामिने अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम तपस्वी शांति सिंधु मुनि पंचम युग में तीर्थ समान,
तीर्थंकर वत् कलिकाल में जिनशासन का कर यशगान।
चक्रवती चारित्र शिरोमणि भव्यों को सत्यार्थ प्रमाण,
तीन भक्ति युत अर्घ चढ़ाऊँ पाने को समकित वरदान।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवन् श्री शांतिसागरजी मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

भव तन भोग विरागी हे गुरु ज्ञान ध्यान तप लीन महान,
विषय वासना अरु कषाय से रिक्त चित्त जिनका अमलान।
पायसिन्धु को पाकर हम सब शिवमग पावें विषय नशाय,
ऐसे उत्तम मुनिपद पंकज अर्घ चढ़ाकर शीश नवाय॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य परम तपस्वी आचार्य भगवन् श्री पायसागर मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष विजेता मन के जेता सूरीवर जयकीर्ति प्रधान,
निर्विकल्प शुभ ध्यान पायकर पाया निज आतम का ज्ञान।
भाव सहित गुरु भक्ति पूजा करती पाप कर्म की हान,
जल फलादि वसु अर्घ चढ़ाकर पाएं हम भी उत्तम ज्ञान॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य आध्यात्म योगी आचार्य भगवन् श्री जयकीर्ति मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराजों में आप प्रमुख हैं सूरीवर जो कहलाते,
भारत गौरव जिनवृष सौरभ मार्ग धर्म का बतलाते॥
रत्नत्रय से आप विभूषित गुरू देश भूषण स्वामी,
भक्तियुत शुभ अर्घ चढ़ाकर बन जाऊँ मैं निष्कामी॥

ॐ ह्रूं परमपूज्य भारतगौरव आचार्य भगवन् श्री देशभूषण मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर कंचन थाल भराये हैं,
निज आतम के वसु गुण पाने तव पद आज चढ़ाये हैं।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणीमात्र हितकारी हो,
सिद्ध-शास्त्र-आचार्य भक्ति युत नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूँ परमपूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य राष्ट्र संत सिद्धांत चक्रवर्ती
श्वेतपिच्छीधाराकाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज की पूजन

स्थापना

(छंद–चउबोला)

श्री जिनशासन के उन्नायक, धर्म प्रभावक हैं ज्ञानी।
स्व–पर हितैषी संयम साधक, रत्नत्रय निधि के दानी॥
विश्व पटल पर धर्म सूर्य, सिद्धांत चक्रवर्ती प्यारे।
श्वेतपिच्छिधारी सूरिवर, विद्यानंद जग में न्यारे॥

भाव भक्तिवश आह्वानन कर, हृदय कमल बिठलाऊँगा।
भव सागर तिरने को गुरुवर, तेरी पूज रचाऊँगा।
तव चरणों की भक्ति संस्तुति, अर्चन वंदन सुखकारी
भाव सहित हम तुम्हें बुलाते, आ जाओ हे अविकारी॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्र! अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टक

(छंद–चउबोला)

जल

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, तव चरणों में धार करूँ।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, तव गुण नित्य विचार करूँ॥

राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

भवाताप से तपा हुआ हूँ, नहीं शांति सुख की छाया।
शाश्वत शांति पाऊँ अतः अब, चंदन तव पद में लाया॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

क्षण विध्वंसी पद को पाकर, मान भाव से चूर रहा।
तव पद तंदुल धवल चढ़ाकर, अक्षय सुख भरपूर रहा॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनींद्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

कामवासना से दूषित मन, भव-भव भ्रमण कराता है।
परम ब्रह्म को पाता है वो, जो पद पुष्प चढ़ाता है॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

जग के सब खाद्यान्न पदारथ, क्षुधा नाश ना कर पाते।
क्षुधा वेदनी नाश करन को, चरुवर गुरु पद में लाते॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

लौकिक दीपक नश्वर जग के, किंचित तम को हरता है।
तव पद में ये अर्पण कर दूँ, चित आलौकित होता है॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय मोहान्धकाराय-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूप दशांगी क्षणभर को ही, तृप्त नासिका करती है।
तव पद सम्मुख अगनी खेऊँ, कर्म कालिमा हरती है॥
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो॥

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

जग के सारे फल भक्षण कर, नर जीवन ना सफल कहा।
गुरु पद आगे फल भेटूँ तो, मोक्ष महाफल मिले अहा॥

राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय महामोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर, कंचन थाल भराये हैं।
निज आतम के वसु गुण पाने, तव पद आज चढ़ाये हैं।।
राष्ट्रसंत विद्यानंद सूरि, प्राणिमात्र हितकारी हो।
सिद्ध शास्त्र आचार्य भक्तियुत, नित प्रति धोक हमारी हो।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

"राष्ट्रसंत गुरुदेव तुम, विद्यानंद मुनीश।
तव गुण निधि मैं पा सकूँ, धरूँ चरण में शीश।।"

चौपाई छंद

जय श्री विद्यानंद मुनीशा, मम श्रद्धा में तुम तीर्थेशा।
विषय कषाय वासना छोड़ी, माया की डोरी तुम तोड़ी।।
मोक्षमार्ग से नाता जोड़ा, सकल परिग्रह तुमने छोड़ा।
ग्रंथ रहित तुम हो निर्ग्रंथी, निज साधक तुम हो शिवपंथी।।1।।
कल्लप्पा के राजदुलारे, माँ सरस्वती के अति प्यारे।
नाम सुरेन्द्र आपने पाया, भववर्धन सब राग हटाया।।2।।
बीस वर्ष में बनकर त्यागी, क्षुल्लक बने हुए वैरागी।
महावीर कीर्ति गुरू ध्याया, पार्श्वकीर्ति शुभ नाम सु पाया।।3।।

सत्रह वर्ष रहे क्षुल्लक तुम, किया अध्ययन तब सर्वोत्तम।
सन तिरेसठ में बने मुनीशा, गुरू देशभूषण सूरीशा।।4।।
विद्यानंद नाम तुम पाया, आतम वैभव को दर्शाया।
रतनत्रय पा गहन साधना, निशदिन करते जिनाराधना।।5।।
सिद्धप्रभु का ध्यान लगाते, आत्मसिंधु में मोद मनाते।
पाठक पदवी गुरु सेवा कर, श्रुत लेखन करते हर्षा कर।।6।।
शास्त्र अनेकों आप लिखे हैं, जिनमें अनुपम सूत्र दिए हैं।
एलाचार्य की पदवी पाई, दिल्ली की जनता हर्षाई।।7।।
गोमटेश अभिषेक कराया, सहस्राब्दि उत्सव यश गाया।
पच्चिस सौवाँ निर्वाणोत्सव, वीर प्रभू का शुभ्र महोत्सव।।8।।
महावीर जी का वह मेला, सहस्राब्दि में रहा अकेला।
महरौली में वीर बिम्ब जिन, भव्य सहस्रों पूजें निशदिन।।9।।
कुंद कुंद भारति मनभावन, निशदिन बरसे ज्ञान का सावन।
कार्य सहस्रों करि तुम अनुपम, जिन वृष का फहराया परचम।।10।।
भक्त शिष्य तव संस्तुति गावें, निश्चित शिव पथ को वे पावें।
वसु वसुधा अरु वसु गुण पाने, पूजें हम वसु कर्म नशाने।।11।।

दोहा

विद्यानंद गुरुदेव को, प्रणमूँ नित्य त्रिकाल।
श्रद्धा से उर धार कर, नशूँ कर्मजंजाल।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्तचक्रवर्ती राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद जी मुनीन्द्राय नमः अनर्घ-पद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वसुधा से ले द्रव्य वसु, पूजूँ मैं वसुयाम।
बसूँ सदा तव चरण में, प्रतिपल करूँ प्रणाम।।

'इत्याशीर्वाद''

पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

परम पूज्य राष्ट्रसंत सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य

श्री विद्यानंद जी मुनिराज की आरती

(लेखक : मुनि प्रज्ञानंद)

(तर्ज–वीराऽऽ, वीरा महावीरा स्वामी)

गुरुवर, गुरुवर, विद्यानंद न्यारे, जिनशासन के ध्रुव तारे।
जगमग उतारूँ थारी आरती,
हो गुरुवर, हम सब उतारें तेरी आरती॥टेक॥
मात सरस्वती के सुत प्यारे, कल्पप्पा पितु थारे।
शेडवाल की माटी पावन, जहाँ सुरेन्द्र अवतारे॥
गुरुवर, दक्षिण के सूर्य निराले, दश दिश कीने उजियारे।
जगमग उतारूँ थारी आरती॥1॥

भेष दिगम्बर धारके गुरुवर, चले मुक्ति को वरने।
गुरू देशभूषण नौका पर, लगे भवोदधि तरने॥
गुरुवर, संयम का लेके सहारा, मोहादिक को संहारा।
जगमग उतारूँ थारी आरती॥2॥

राष्ट्रसंत सिद्धांत चक्रवर्ती गुरुवर महाज्ञानी।
बाल ब्रह्मचारी इस युग में, गौरव गाथा न्यारी॥
गुरुवर, गिरतों को तुमने संभाला, जप कर तब नाम की माला।
जगमग उतारूँ थारी आरती॥3॥

लखके उत्तम समाधि तुमरी, हुआ जगत आकर्षण
वसुनंदी के रूप में, अब हम, पायेंगे तब दर्शन॥
गुरुवर, जिनवृष के हो तुम सूरी, क्षपक शिरोमणी सूरी।
जगमग उतारूँ थारी आरती॥4॥

श्री मुनि सुव्रतनाथ विधान मांडना

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

प्राकृत साहित्य

1. प्राकृत वाणी भाग-1, 2, 3
2. अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)
3. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
4. अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)
5. जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
6. जदि-किदि-कम्मं (यति कृतिकर्म)
7. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
8. णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)
9. तच्चसारो (तत्त्व सार)
10. धम्म-सुत्तं (धर्म सूत्र)
11. रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
12. सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)
13. अप्पणिब्भर भारदो (आत्मनिर्भर भारत)
14. विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्या वसु श्रावकाचार)
15. अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
16. अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)
17. णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
18. मूल-वण्णो (मूल वर्ण)
19. मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
20. विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)
21. विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
22. समवसरण सोहा (समवशरण शोभा)
23. वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
24. अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)
25. कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
26. को विवेगी (विवेकी कौन)
27. पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
28. तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)
29. रयणकंडो (सूक्ति कोश)
30. धम्म-सुत्ति-संगहो (धर्म सूक्ति संग्रह)
31. कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
32. खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)
33. सिरि सीयलणाह चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
34. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)
35. समणायारो (श्रमणाचार)

भावार्थ

1. अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
2. णिग्गंथ-थुदि (निर्ग्रंथ स्तुति)
3. तच्च-सारो (तत्त्वसार)
4. रट्ठसंति-महाजण्णो (राष्ट्रशांति महायज्ञ)
5. णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
6. अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)

टीका ग्रंथ

1. प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)
2. वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3. नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)

इंग्लिश साहित्य

Inspirational Tales Part- 1 & 2

वाचना साहित्य

1. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)
2. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
4. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दुःखदानी)
4. उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)
5. उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दुःख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग 1-15
15. चूको मत
16. जय बजरंगबली
17. जीवन का सहारा
18. ठहरो! ऐसे चलो
19. तैयारी जीत की
20. दशामृत
21. धर्म की महिमा
22. ना मिटना बुरा है न पिटना
23. नारी का धवल पक्ष
24. शायद यही सच है
25. श्रुत निर्झरी
26. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
27. सीप का मोती (महावीर जयंती)
28. स्वाती की बूँद

हिंदी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. अच्छी बातें
3. आज का निर्णय
4. आ जाओ प्रकृति की गोद में
5. आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान
6. आहारदान
7. एक हजार आठ
8. कलम पट्टी बुद्धिका
9. गागर में सागर
10. गुरु कृपा
11. गुरुवर तेरा साथ
12. जिन सिद्धांत महोदधि
13. डॉक्टरों से मुक्ति
14. दान के अचिन्त्य प्रभाव
15. धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)
16. धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17. निज अवलोकन
18. वसु विचार
19. वसुनन्दी उवाच
20. मीठे प्रवचन (भाग 1-6)
21. रोहिणी व्रत कथा
22. स्वप्न विचार
23. सद्गुरु की सीख
24. सफलता के सूत्र
25. सर्वोदयी नैतिक धर्म
26. संस्कारादित्य
27. हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1. अक्षरातीत
2. कल्याणी
3. चैन की जिंदगी
4. ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5. मुक्ति दूत के मुक्तक
6. हाइकू
7. हीरों का खजाना

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. चौसठऋद्धि विधान
4. णमोकार महार्चना
5. दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)
6. यागमंडल विधान
7. समवशरण महार्चना
8. श्री नंदीश्वर विधान
9. श्री सम्मेदशिखर विधान
10. श्री अजितनाथ विधान
11. श्री संभवनाथ विधान
12. श्री पद्मप्रभ विधान
13. श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)
14. श्री चंद्रप्रभ विधान
15. श्री पुष्पदंत विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
18. श्री नेमिनाथ विधान
19. श्री महावीर विधान
20. श्री जम्बूस्वामी विधान
21. श्री भक्तामर विधान
22. श्री सर्वतोभद्र महार्चना

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य जी)
3. आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)
4. कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)
6. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7. चार श्रावकाचार संग्रह
8. जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9. जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)
10. जिन सहस्रनाम स्त्रोत
11. तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)
12. तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13. तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)
14. तत्त्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15. तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)
16. तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17. धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
18. धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)
20. नीतिसार समुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदी स्वामी जी)
21. पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)
22. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23 पंचरत्न
24. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्र स्वामी जी)
25. मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)
26. भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी जी स्वामी)
27. भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)
28. मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्ति स्वामी जी)
29. योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबालचंद्र जी)
30. योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31. रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)
32. वसुऋद्धि
    - रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)
    - स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
    - पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)
    - इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
    - लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)
    - वैराग्यमणि माला (आ. श्री विशाल कीर्ति जी)
    - अर्हत प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)
    - ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33. सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगति स्वामी जी)
34. सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35. समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
36. समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37. सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)
38. विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय जी)

प्रथमानुयोग साहित्य

1. अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)
2. आराधना कथा कोष (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)
3. करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)
4. कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5. गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)
6. चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7. चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)
8. चेलना चारित्र
9. चंद्रप्रभ चरित्र
10. चौबीसी पुराण
11. जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
12. त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
14. धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15. धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
16. नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17. नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)
18. प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19. पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)
20. पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21. पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)
22. पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23. भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)
24. भद्रबाहु चरित्र
25. मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
26. महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27. महापुराण (भाग 1-2)
28. महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29. मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)
30. यशोधर चरित्र
31. रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)
32. रोहिणी व्रत कथा
33. व्रत कथा संग्रह
34. वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35. विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)
36. वीर वर्धमान चरित्र
37. श्रेणिक चरित्र
38. श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39. श्री जम्बूस्वामी जी चरित्र (श्री वीर कवि)
40. शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41. सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)
42. सम्यक्त्व कौमुदी
43. सती मनोरमा
44. सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45. सुरसुंदरी चरित्र
46. सुलोचना चरित्र
47. सुकुमाल चरित्र
48. सुशीला उपन्यास
49. सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बैरया)
50. सुभौम चरित्र
51. हनुमान चरित्र
52. क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान
   - वास्तु निवारण
   - मृत्युंजय (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्त्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्त्रानाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल))
   - शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)
5. कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)
6. तत्त्वोपदेश (छहढ़ाला) (पुं. प्रवर दौलतराम जी)
7. दिव्य लक्ष्य (संकलन-हिंदी पाठ, स्तुति आदि)
8. धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
10. भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11. विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13. संसार का अंत
14. स्वास्थ्य बोधामृत

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1. अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
2. पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)
3. वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
4. दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्वनंदनी, वर्चस्वनंदनी)
5. स्मृति पटल से भाग 1-2 (आ. श्री वर्धस्वनंदनी)
6. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
7. गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)
8. परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
9. स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)
10. स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
11. हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)
12. वसु सुबंध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद्र जी जैन)
13. समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')